RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

ज्योतिष शास्त्र की विवाह मेलापक में उपयोगिता

डॉ0 मुकेश शर्मा

प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज, यमुना नगर(हरियाणा)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
वर और कन्या का परस्पर कुल, शील, आयु, विद्या, वित्त, सनाथता

ABSTRACT

विवाह-संस्कार से पूर्व वर और कन्या का परस्पर कुल, शील, आयु, विद्या, वित्त, सनाथता एवं शारीरिक स्वास्थ्य का विचार प्राचीन काल से ही करने का प्रचलन है। इन सब तथ्यों के साथ एक महत्त्वपूर्ण परिपाटी है, वर-कन्या की जन्मकुण्डली का परस्पर मिलान। मेलापक विचार में अष्टकूट, दशकूट व मांगलिक आदि का सामान्य विचार प्राचीन काल से ही किया जाता रहा है। प्राचीन काल में इसका प्रचलन सम्भ्रान्त व शिक्षित वर्ग में ही किया जाता था परन्तु परिवर्तित सामाजिक परिवेश में मेलापक का प्रचलन प्राय: सर्वत्र दृष्टि गोचर होता है। मेलापक के महत्त्व की पराकाष्ठा ही है कि चाहे व्यक्ति की पृष्ठभूमि किसी सम्प्रदाय की हो। वह अवसर मिलने पर अपने दाम्पत्य सम्बन्ध को जानने के लिए उत्सुक रहता है। ऐसे उत्सुक प्रश्नार्थी के लिए ज्योतिषशास्त्र बहुत सहायक है। ज्योतिषीय-दृष्टिकोण से भावी वर-वधू के स्वभाव हेतु प्रथम भाव, पारिवारिक सुख के लिए द्वितीय भाव, चतुर्थ भाव से गृहस्थ में शान्ति, पंचम से सन्तान, षष्ठ से रोग, सप्तम एवं द्वादश से दाम्पत्य सुख, अष्टम से आयु, नवम से भाग्य, दशम से प्रतिष्ठा तथा एकादश से इच्छापूर्ति का विचार करना चाहिए। कारक विचार के अन्तर्गत शुक्र, बृहस्पति का विचार तथा ग्रह युति का विचार अनिवार्य है। नवमांश कुण्डली वैवाहिक दृष्टिकोण से विशेष ध्यातव्य है। षोडशवर्ग का विचार भी सूक्ष्म फलादेश में सहायक हैं। सुख-दु:ख की अवधि की जानकारी दशा एवं गोचर पर आधारित है। उपर्युक्त तथ्यों के साथ प्रयुक्त ज्योतिषशास्त्र वैवाहिक जीवन में आने वाली समस्त सुखद एवं दु:खद परिस्थितियों को स्पष्टरूपेण उद्घाटित करता है।

भारतीय परम्परा के अनुसार मानव जीवन चार पुरुषार्थों की साधना हेतु प्राप्त होता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह चार प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य के लिए हैं। इन पुरुषार्थों को लक्ष्य मानकर मानव जीवन को चार आश्रमों के द्वारा व्यवस्थित किया गया। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास। एक मनुष्य की आयु को चार समान भागों में विभक्त करके 25-25 वर्षो का समय चारों आश्रमों में रहते हुए उपर्युक्त चार पुरुषार्थो की प्राप्ति हेतु निश्चित किया गया।

ब्रह्मचारी सर्वप्रथम 25 वर्ष तक गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करके स्वयं को भावी जीवन के लिए तैयार करते थे। तत्पश्चात् गृहस्थ आश्रम में रहकर धर्मपूर्वक नियम पालन करते हुए अन्य आश्रमियों का भी स्वयं पालन पोषण करते थे। इसके बाद 50 से 75 वर्ष की अवस्था वानप्रस्थ आश्रम की थी जो कि गृहस्थ से विरक्ति और संन्यास की ओर प्रगति की अवस्था थी। अन्त में सन्यास आश्रम जिसमें मनुष्य सम्पूर्ण मोहमाया को त्यागकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को आत्मसात् करते हुए स्वयं की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते थे। इस प्रकार चार आश्रमों के द्वारा मानव जीवन को ऐसा सुव्यवस्थित भारतीय ऋषियों ने किया था जो कि अन्यत्र सभ्यताओं में दृष्टिगोचर नहीं होता। यहाँ एक तथ्य ध्यातव्य है कि चार आश्रमों में सबसे मुख्य आश्रम गृहस्थ आश्रम है जो कि अन्य आश्रमों का आधार है।[i]

गृहस्थ आश्रम का प्रमुख उद्देश्य विवाह करके सन्तान उत्पत्ति करना है जो कि सृष्टि चक्र का आवश्यक अंग है। उपनिषदों के अनुसार सन्तान उत्पति करना गृहस्थ आश्रम का अनिवार्य अंग है। यदि सन्तान होगी तभी संसार चलेगा। बालक ही आगे जाकर ब्रह्मचारी बनकर ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश करते हैं। ब्रह्मचारी के पालन-पोषण की जिम्मेदारी गृहस्थ की होती है। वानप्रस्थी एवं सन्यासी की भी खान-पान, रहन-सहन की व्यवस्था प्राचीन समय से ही गृहस्थी करते रहे हैं। 'धन्यो गृहस्थाश्रम:' कहकर इस आश्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा शास्त्रों में की गई है। गृहस्थ आश्रम रूपी रथ के पति-पत्नी रूप में दो चक्र (पहिया) होते हैं जो कि इस रथ को चलाते हैं।

पति-पत्नी का परस्पर सम्बन्ध ही दाम्पत्य सम्बन्ध कहलाता है जिसका उद्भव विवाह-संस्कार के पश्चात् होता है। विवाह संस्कार से पूर्व वर एवं कन्या पक्ष के लोग परस्पर कुल, शील, शारीरिक स्थिति, आयु, विद्या, वित्त एवं सनाथता आदि प्रमुख सात तत्त्वों का भलीभान्ति विचार करते हैं। यह सब तत्त्व ऐसे हैं जिनका सामान्य मनुष्य अपने विवेक से विचार करते हैं। इन सब तत्त्वां के साथ वर-वधू का दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा?

RRIJM 2015, All Rights Reserved

एतदर्थ जन्म कुण्डली मिलान की परम्परा भी हमारे समाज में प्रचलित है।

जन्म कुण्डली मिलान के द्वारा मुख्य रूप से भावी-दम्पत्ति के परस्पर सुख-दुःख का विचार किया जाता है। दाम्पत्य सुख के दृष्टिकोण से सामान्य रूप से अष्टकूट, दशकूट मिलान, मंगलीक विचार, परस्पर सुख-दुःख का विचार किया जाता है। मिलान की यह विधा उस समाज के अनुकूल रही जहाँ पर पत्नी का 'पति ही परमेश्वर है' ऐसे नियम का पालन करना होता था। पत्नी को गृहलक्ष्मी के रूप में स्वीकार किया जाता था तथा स्त्रियों को पति से विच्छेद की अनुमति नहीं थी। उस समय स्त्री के लिए पति का घर ही सर्वस्व होता था चाहे वहाँ सुख मिले या दुःख मिले। स्त्री घर में रहकर जीवन-पर्यन्त एक ही पति के साथ रहकर पत्नी रूप में पति की, माता रूप में बच्चों की, पुत्र वधू रूप में सास-ससुर व अन्य सम्बन्धियों की देखभाल करती थी तथा अन्य सभी लोग उस स्त्री की सुरक्षा एवं सहयोग में तत्पर रहते थे। यह पूर्णतया भारतीय गृहस्थ आश्रमी दम्पत्ति का दाम्पत्य जीवन हुआ करता था।

वर्तमान समय में इस व्यवस्था में अत्यधिक संक्रमण हुआ। वैश्वीकरण हाने के कारण हम भारतीयों ने पाश्चात्य संस्कृति को जाना और अपनाया तथा पाश्चात्यों ने हमारी संस्कृति को जाना और अपनाया। वर्तमान काल संक्रमण का काल है, अभी हमने पूर्ण रूपेण न तो भारतीय संस्कृति व परम्परा का छोड़ा है और न ही हम पूर्ण रूप से पाश्चात्य हो गए हैं। इस संक्रमण का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव हमारी भारतीय विवाह संस्था पर अवश्य हुआ है। इस संक्रमण के कारण विवाह संस्कार जो कि भारतीय आदर्श गृहस्थ जीवन का आधार है वह विनाशोन्मुख हो गया है।

पाश्चात्य संस्कृति,भौतिकवादी शिक्षा, पत्रकारिता का भ्रामक व अश्लील प्रचार, नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा की कमी आदि अनेक ऐसे कारण है जिनके कारण दम्पत्ति का दाम्पत्य जीवन नष्ट हो रहा है। वर्तमान में हम वैश्वीकरण को रोक नहीं सकते परन्तु हमें स्वयं को मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक एवं शारीरिक रूप से इतना सशक्त करना होगा कि हम भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं में रहते हुए कीचड़ में खिले कमल की भान्ति स्वयं को इस संक्रमण से मुक्त रख सक। एतदर्थ भारतीय विद्याओं के प्रचार-प्रसार और शोध पर बल देना होगा तथा प्रत्येक व्यक्ति को भारतीय विद्याओं के प्रति आकर्षित करना होगा। इसके लिए संस्कृत भाषा को माध्यम बनाकर हमारे ग्रन्थों म वर्णित चौसठ विद्याओं का पुनरुद्धार करना बहुत आवश्यक है। संस्कृत विशेषज्ञों को इस बात पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है कि अब संस्कृत भाषा व्यवसायप्रद भाषा नहीं रही है जिस कारण से इस भाषा के प्रति समाज में आकर्षण समाप्त प्रायः है। सभी विद्याओं को संस्कृत माध्यम से अध्यापन कराना एक श्रेष्ठ पक्ष हो सकता है। इन विद्याओं में वर्तमान काल के अनुसार शोध-परक परिवर्तन आवश्यक है।

हम ज्योतिष शास्त्र का दाम्पत्य सम्बन्ध में बहुत अच्छे तरीके से प्रयोग कर सकते है। प्राचीन काल में 'मेलापक-विचार' में अष्टकूट अथवा दशकूट के गुण मिलान, मंगलीक विचार तथा सामान्य आयु, विद्या एवं सौभाग्य का विचार करके ही अपने कर्त्तव्य की इति श्री ज्योतिषी किया करते थे परन्तु वर्तमान में इस प्राचीन पद्धति का प्रयोग अधिकांश रूप में असफल होता है। इसका कारण वर्तमान समाज की बदलता मानसिकता है। परिवर्तन के साथ समाज बदलता है, समाज के साथ समाज की सोच बदलती है समाज के साथ ही प्राचीन विद्याओं को भी नवीन रूप में प्रस्तुत करना उस विद्या के विशेषज्ञों की जिम्मेदारी है। ज्योतिष शास्त्र एक दम्पत्ति के दाम्पत्य जीवन को सुव्यवस्थित रखने में सहायक है। इसके लिए हमें एक बार वर-वधू के विवाह से पूर्व कुण्डली के सभी गुण दोषों का सूक्ष्म रूप से अध्ययन करना चाहिए तथा निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

1. **श्रद्धा भाव से पृच्छा–** वर-वधू के लिए पत्रिका मिलान कराने वाले माता-पिता को सर्व प्रथम शुभ दिन विचार करके योग्य ज्योतिषी के पास फल,पुष्प व मिष्ठान्न आदि लेकर जाना चाहिए तथा सब अर्पण करके प्रश्न पूछना चाहिए। ज्योतिष शास्त्र में श्रद्धा-भाव का बहुत महत्त्व है। अच्छे भाव से जो प्रश्न पूछे या कुण्डली दिखाएँ ओर ज्योतिषी भी सुयोग्य हो और अच्छे भाव से उत्तर दे ता फलादेश गलत नहीं होता है।
2. **समय शुद्धि विचार–** ज्योतिषी को समय शुद्धि का विचार अवश्य करना चाहिए। जन्मकुण्डली को देखकर कुछ सामान्य बाते बताई जानी चाहिए अथवा उनका कुण्डली के माध्यम स स्पष्टीकरण कर देना चाहिए। सही फलादेश शुद्ध जन्म समय और शुद्ध जन्म कुण्डली पर आधारित है।
3. **भाव विचार–** यह सब निश्चित होने के बाद सामान्य गुण, मंगलीक तथा अन्य गुण दोषों का विचार करने के उपरान्त सबसे मुख्य जन्म कुण्डली एवं अन्य कुण्डलियों का विस्तृत एवं सूक्ष्म अध्ययन करना चाहिए। इसके अन्तर्गत जन्म कुण्डली के प्रत्येक भाव का निम्न विधि से विश्लेषण करें।

प्रथम भाव– यह भाव जातक अथवा जातिका की शरीराकृति को बतलाता है।[ii]इसके अतिरिक्त रंग-रूप, रोग, मान-सम्मान तथा जीवन के सुख-दुःख का प्रतिबिम्ब होता ह।[iii] दोनों वर-वधू के लग्न-लग्नेश की स्थिति, युति, दृष्टि एवं बलाबल से विचार करके दोनों के स्वभाव का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। यहाँ ध्यातव्य है कि लग्नस्थ पापग्रह दृष्टिवश सप्तम भाव जोकि दाम्पत्य सुख का भाव है इसको पीड़ित करता है।

द्वितीय भाव– दाम्पत्य जीवन में द्वितीय भाव का बहुत महत्त्व है। यह भाव वाणी का है।[iv] दाम्पत्य जीवन में अधिकतर परेशानी वर-वधू में परस्पर कटु वचन, वाद-विवाद से होती देखी गयी है। दूसरा यह भाव मुख का भी है आजकल नशे की अधिकता से विवाह सम्बन्ध विच्छेद होते रहते है। इस में द्वितीय भाव की बड़ी भूमिका है। यह भाव कुटुम्ब सुख तथा धन की कमी या अधिकता भी दर्शाता है।[v]

तृतीय भाव- सामान्य रूप से यह भाव छोटे भाई-बहन के विषय में जानकारी देता है।[vi] विवाह मिलान के सन्दर्भ में जातक के विचार प्राकट्य, क्रिया की प्रतिक्रिया तथा भाई-बहन द्वारा वैवाहिक जीवन में कष्ट अथवा परेशानी का प्रदर्शक है। सामान्य रूप से यहाँ पर पाप या क्रूर ग्रह का प्रभाव जातक को क्रोधी, आवेशी तथा गुस्से में आकर मारपीट तक करना जैसे स्वभाव का बना देता है जो कि वैवाहिक जीवन में कुटता पैदा करके विच्छेद की स्थिति पैदा करता है।

चतुर्थभाव– गृह-सुख, संस्कार, मन की भावनाओं को जानने का यह भाव मुख्य है।[vii] इस भाव के साथ अष्टमभाव जो कि विरासत एवं परम्पराओं का भाव है इनके अध्ययन से हमें व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायता मिलती है। आजकल हम देखते हैं कि वधू का पारिवारिक वातावरण यदि वर के पारिवारिक वातावारण से भिन्न होता है तो वधू को समायोजन में अधिक समस्या आती है। जन्मकुण्डली मिलान के द्वारा अगर इन सबका पूर्वाभास मिल जाए तो व्यक्ति उस विषय में पहले ही सतर्क हो जाता है।

पञ्चम भाव– यह भाव विद्या का है[viii] परन्तु विवाह सम्बन्ध से पूर्व वर-वधू का परस्पर विद्या का सन्तुलन सम्भ्रान्त वर्ग प्राथमिक स्तर पर देख लेते हैं इसलिए इस भाव का मुख्य प्रयोजन सन्तान तथा परस्पर बुद्धि व विचारों का सामञ्जस्य हो जाता है।[ix] विशेष रूप से वर-वधू दोनों की कुण्डली में पञ्चम भाव का सन्तान सन्दर्भ में बहुत महत्त्व है। इस भाव के साथ सन्तान के लिए नवमांश कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली बीज व क्षेत्र स्फुट तथा शुक्र, चन्द्र मंगल ग्रहों का विशेष महत्त्व होता है। हम अनेकदा देखते हैं कि जो निःसन्तान दम्पत्ति होते है उनका जीवन या तो घोर निराशाप्रद होता है या उनमें इस कारण से विच्छेद तक हो जाता है। प्रेम विवाह में इस भाव का महत्त्व है।

षष्ठ भाव– सुखमय जीवन के लिए निरोगी शरीर का होना बहुत ही आवश्यक है। षष्ठ भाव रोग का मुख्य स्थान है।[x] बीमारी के साथ दुर्घटना का भी यह भाव संकेत करता है।[xi]अन्य तृतीय, षष्ठ, अष्टम, एकादश व द्वादश भावों के साथ मिलकर यह भाव मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट देने की क्षमता रखता है। यह भाव दाम्पत्य जीवन में रोग, ऋण, कलह-क्लेश तथा संघर्ष का परिचायक है जो कि सुखी वैवाहिक जीवन की यात्रा मे कांटो भरा मार्ग है।

सप्तम भाव – विवाह का मुख्य भाव सप्तम है।[xii] इसके साथ अन्य भाव जुड़कर जातक की चारित्रिक एवं वैवाहिक सुख की भवितव्यता को स्पष्ट रूपेण उद्घाटित करत हैं। इसमें क्रूर ग्रह की स्थिति तथा इसके स्वामी की पाप-भावों में स्थिति, पाप-युति व पाप-दृष्टि दाम्पत्त्य जीवन में समस्याओं को दर्शाती है। वैसे तो जन्मकुण्डली के सभी भावों का दाम्पत्य जीवन पर प्रभाव पड़ता है परन्तु सप्तम भाव सर्व प्रमुख भाव ह जो कि सम्पूर्ण वैवाहिक जीवन को प्रदर्शित करता है।[xiii] प्रत्येक भाव की तरह इस भाव, इसके भाव पति तथा कारक ग्रह की स्थिति के साथ नवमांश कुण्डली का सूक्ष्म अध्ययन दाम्पत्य जीवन को उद्घाटित करता है।

अष्टम भाव– अष्टम भाव की गणना त्रिक (6-8-12) भावों में की गयी है। यह भाव सौभाग्य, मांगल्य, आयु, विनाश, गुप्त कष्ट आदि को सूचित करता है।[xiv] गुप्त विद्याओं के लिए यह भाव विशेष महत्वपूर्ण होता है परन्तु वैवाहिक जीवन के लिए कष्टकारी ही होता है। जब भी अष्टम भाव का विवाह सम्बन्धी ग्रहों, भावों से सम्बन्ध बनता है तो अचानक अनेक समस्याओं को पैदा करता है। यह भाव जातक की कुण्डली में उसके जीवन साथी का परिवार, वाणी, धन तथा मृत्यु तुल्य कष्ट का परिचायक है।

नवम भाव– त्रिकोण भावों में सबसे मुख्य भाव नवम ही है। यह धर्म का भाव है।[xv] जन्म कुण्डली का प्रत्येक भाव नवम भाव से प्रभावित होता है। नवम भाव भाग्य का भाव है।[xvi] भाग्य के द्वारा ही हमें सभी सुख प्राप्त होते है। हमारे वैवाहिक जीवन का मुख्य उद्देश्य धर्म प्राप्ति है जो कि नवम भाव से प्रदर्शित हेाता है। जिस जातक का नवम भाव मजबूत होता है उसका जीवन ईश्वरीय कृपा से परिपूर्ण होता है। ऐसा होने से जीवन के सभी पक्षों में सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दशम भाव – यह भाव मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, कर्म व्यवसाय आदि का परिचायक है।[xvii] वर्तमान में दम्पत्ति जो अपनी सन्तान हेतु सुयोग्य वर का निरीक्षण करते हैं उसके व्यवसाय या नौकरी को महत्व देते हैं। यदि हम कुण्डली का दशम भाव का समुचित निरीक्षण नवमांश, दशमांश के सहित करते ह तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जातक अपने कार्य-व्यवसाय में सफल हागा या नही होगा। नौकरी में सफलता है या अपने व्यवसाय में।

कई जातक नौकरी छोड़कर अपने कार्य में आ जाते हैं और सफल भी हो सकते हैं या असफल भी हो सकते हैं। इसी प्रकार कोई व्यवसाय छोड़कर नौकरी में आ जाते हैं और सफलता अथवा असफलता अपने भाग्य के अनुसार प्राप्त करते हैं। दम्पत्ति जो लड़के का वर्तमान नौकरी या व्यवसाय तो देख सकते हैं परन्तु भविष्य में उसकी नौकरी व्यवसाय कैसा रहेगा? यह केवल ज्योतिष के माध्यम से ही स्पष्ट हो सकता है।

एकादश भाव – धन, इच्छापूर्ति, अग्रज भाई या बहन तथा धन प्राप्ति का मार्ग इत्यादि बातें एकादश भाव की हैं।[xviii] एकादश भाव, द्वितीय भाव, पञ्चम भाव तथा नवम भाव धन की स्थिति को बतलाते हैं। इसके साथ नवमांश चक्र और होराचक्र भी सहायक है। विवाहोत्तर जीवन में धन की परम आवश्यकता है। आजकल धन की कमी से दाम्पत्य जीवन में असन्तोष की धारणा बढ़ती है। सुखमय दाम्पत्य जीवन के लिए एकादश भाव का अच्छा होना आवश्यक है।

द्वादश भाव – यह भाव दाम्पत्य जीवन का महत्वपूर्ण अंग है।[xix] सामान्य रूप से यह भाव व्यय, यात्रा, कष्ट, बीमारी तथा अस्पताल का परिचायक है परन्तु दाम्पत्य सुख के दृष्टि कोण से शयनसुख का मुख्य भाव है।[xx] सप्तम भाव सहित इसका अध्ययन वर-वधू के चरित्र तथा परस्पर शयन सुख हेतु किया जाता है। इसके साथ मंगल-शुक्र युति तथा गुरुचाण्डाल योग का भी महत्व है। वर्तमान में हम देखते है पुरुष या स्त्री के चारित्रिक पतन अथवा विवाहेतर सम्बन्धों के कारण विवाह विच्छेद तक हो जाते हैं।

4. **ग्रहविचार –** भावों के साथ-साथ ग्रहों का कारक के रूप में अपना विशेष महत्व होता है। पुरुष की कुण्डली में शुक्र की स्थिति स उसके दाम्पत्य जीवन का सम्बन्ध होता है। कारक के दृष्टिकोण से पुरुष की जन्म कुण्डली में शुक्र विवाह सम्बन्धी समस्त ज्ञान प्रदान करता है। स्त्री की कुण्डली में विवाह होने तक बृहस्पति तदुपरान्त सन्तान के लिए चन्द्र, मंगल तथा बृहस्पति का और वैवाहिक जीवन के लिए शुक्र का प्रमुखता से विचार होता है। सूर्य से दोनो की आत्मिक स्थिति अर्थात् आन्तरिक विचारों का पता चलता है, चन्द्रमा से परस्पर मानसिक स्थिति का विश्लेषण होता है। अन्य ग्रहों का भी मिलान समय विचार अच्छे ढंग से करना चाहिए। सामान्य रूप से ग्रहों का सम्बन्ध यथा मंगल-शुक्र का युति सम्बन्ध,[xxi] गुरु-राहु, राहु-शुक्र तथा केतु-शुक्र व इस प्रकार के अनेक सम्बन्ध होते है जो दाम्पत्य जीवन में दु:खद परिवर्तन ला सकते हैं।
5. **नवमांश चक्र –** नवमांश कुण्डली वैवाहिक जीवन को स्पष्ट रूप से देखने के लिए दर्पण है।[xxii] जन्म कुण्डली अगर शरीर है तो नवमांश उसकी आत्मा है। हम देखते ह कि 24 घंटे में 12 जन्म कुण्डली बनती है लगभग 2 घंटे तक एक राशि का लग्न रहता है। कई बार हम देखते हैं कि चार कुण्डलियों का समान लग्न होने के बाद भी दाम्पत्य जीवन भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। ऐसी परिस्थिति में यदि जन्म कुण्डली के साथ नवांश चक्र का उपयोग किया जाए तो यह समस्या सुलझ जाती है।

एक दिन रात में 108 नवांश कुण्डली बनती है और हर नवांश कुण्डली जन्म कुण्डली क सहित अलग-अलग ग्रह स्थिति और फल को प्रदर्शित करती है। नवमांश कुण्डली को सामान्य अध्ययन करने के लिए जन्म कुण्डली के लग्नेश, सप्तमेश, कारक ग्रह तथा नवमांश कुण्डली के लग्नेश का नवमांश कुण्डली में विचार करना चाहिए और यदि विशेष अध्ययन करें तो नवमांश कुण्डली का पृथक् विवाह कुण्डली मानकर भी विचार करना शास्त्र सम्मत है।

6. **षोडशवर्ग विचार –** सामान्य रूप से कुण्डली मिलान जन्म कुण्डली तक ही सीमित रखा जाता है। अगर वर-वधू का जन्म समय सूक्ष्मतम स्तर तक सही हो और समुचित गणना करके चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग करके वृहत् वर्ग सहित कुण्डली निर्माण करें और प्रत्येक विषय का ज्ञान रखने वाले ज्योतिषी जो गणित-फलित में निपुण हों, नि:स्पृह होकर तन्मयता के साथ मिलान कर तो भवितव्यता उनकी वाणी का अनुसरण करती है अर्थात् जो फलादेश वह कहते है, सटीक होता है।

षोडशवर्ग का सूक्ष्म फलादेश में बहुत योगदान है। षोडशवर्ग कुण्डलियों में जन्म कुण्डली या नवमांश कुण्डली से भी अधिक महत्व षष्ट्यंश कुण्डला का होता है। जब दशवर्ग व षोडश वर्ग की चर्चा की गयी है तो सर्वाधिक अंक इसी षष्ट्यंश कुण्डली को दिए जाते ह। यह कुण्डली षोडशवर्ग में सबसे सूक्ष्म है तथा एक लग्न में 60 कुण्डली षष्ट्यंश में गिनी जाती है। एक दिन-रात में 720 प्रकार की षष्ट्यंश कुण्डलियाँ बनती हैं। इससे भारतीय ज्योतिष की सूक्ष्मता, गहनता और विशालता का पता चलता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जो भारतीय ज्योतिष पर आक्षेप करते हैं कि जुडवाँ बच्चों में लगभग समान जन्म कुण्डली होने पर भी उनमें भिन्नता क्यों हैं? यह समस्त षोडशवर्ग इसका उत्तर है। इन षोडशवर्गो में षष्टयश की महता तो जन्म कुण्डली व नवमांश से भी अधिक है इसके साथ सन्तान सन्दर्भ में समस्त ज्ञान के लिए सप्तमांश कुण्डली का अध्ययन किया जाता है।[xxiii] वर-वधू के चरित्र एवं जीवन में अरिष्ट ज्ञान हेतु त्रिंशांश कुण्डली देखने योग्य होती है।[xxiv] होरा चक्र वर-वधू के धन-सम्पत्ति व समद्धि का स्पष्टीकरण करता है। चतुर्थांश कुण्डली अचल सम्पत्ति को विशेष रूप से प्रदर्शित करती है। आजीविका, मान-सम्मान तथा पद-प्रतिष्ठा के लिए दशमांश कुण्डली देखनी आवश्यक है। अन्य वर्ग भी है जोकि सामान्य अथवा विशेष रूप से वैवाहिक जीवन को पभावित करते हैं। सामान्य रूप से फल कथन हेतु जन्मकुण्डली का प्रयोग होता है परन्तु विशेष रूप से फल कथन के लिए जन्म कुण्डली सहित यथा सम्भव वर्गो का प्रयोग करें तो सटीक फलकथन में परम उपयोगी है ऐसा ज्योतिष विद्या के विशेषज्ञों का मत है।

7. **दशा एवं गोचर–** जन्म कुण्डली के समुचित मिलान के उपरान्त वर-वधू की जन्म कुण्डली में वर्तमान दशा के अनुसार महादशा और अन्तरदशा का विचार अवश्य करना चाहिए। यदि कोई ग्रह किसी कुण्डली में वैवाहिक जीवन हेतु कष्टकारी है तो यथा सम्भव उस ग्रह की दशावधि को टाल देना चाहिए। ऐसा अनेक बार अनुभव में आया है कि ऐसे ग्रह जोकि दाम्पत्य जीवन के लिए कष्टकारी है उसकी दशा में विवाह-संस्कार होने पर या तो पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है अथवा जीवन भर आपस में सामञ्जस्य का अभाव रहता है। खराब ग्रह की दशा में हुए विवाह का पछतावा दम्पत्ति को अवश्य रहता है।

निष्कर्ष- उपर्युक्त सभी बिन्दुओं का विस्तृत रूप से विश्लेषण करने के उपरान्त वर-वधू की जन्मकुण्डली से उनके भावी दाम्पत्य जीवन की स्पष्ट रूपरेखा तैयार हो जाती है। विचार करने से वर-पक्ष वधू के बारे में और वधू-पक्ष वर के बारे में समुचित तथ्यों यथा स्वभाव, धन, पराक्रम, सुख, सन्तान, रोग, ऋण, चरित्र, सौभाग्य, धार्मिकता, आयु, व्यवसाय अथवा नौकरी, इच्छापूर्ति और परस्पर सम्बन्ध को सही प्रकार से जान सकते ह। ज्योतिष-शास्त्र में इसके अतिरिक्त भी बहुत सारे विषय भरे-पड़े हैं जिनके बारे में व्यापक शोध की आवश्यकता है।

विवाह मेलापक सम्बन्धी विषयों की वर्तमान समाज में प्रायोगिकता पर चर्चा भी प्रासंगिक है। वर्तमान समाज में समय की कमी से सब लोग ग्रस्त हैं। वर-वधू के माता-पिता के लिए अपनी सन्तान का विवाह करना उनकी नैतिक जिम्मेदारी भी है और कठिन कार्य भी है। कुछ लोग जन्मपत्रिका मिलान करते ही नहीं है और अधिकतर जो करते ह वो भी केवल गुण मिलान और मंगलीक विचार करके विवाह कर देते हैं। आजकल ज्योतिष को व्यवसाय बनाकर धनार्जन करने वाले ज्योतिषी के पास भी समय का अभाव है। इसलिए वह भी जल्दी से जल्दी कुण्डली मिलान करके अपनी फीस ले लेते हैं। मिलान करने के बाद विवाह होने पर जब समस्या आती है तो सब लोग ज्योतिष और ज्योतिषी की निन्दा करते हैं। ऐसी स्थिति में दोष ज्योतिष-शास्त्र पर मढ़ दिया जाता है जो कि एक परोपकारी विज्ञान है।

यह ज्योतिषी का नैतिक दायित्व है कि सब बातों का स्पष्टीकरण पृच्छक के समक्ष कर दे। यदि वह ऐसा नहीं करे तो दोषी है। भविष्यज्ञान उत्सुक जनों को भी यह बात समझनी चाहिए कि ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार विवाह मेलापक एक जटिल और श्रम-साध्य प्रक्रिया है जो कि अत्यधिक समय की अपेक्षा रखती है। ज्योतिषी का अपना अध्ययन और समय बहुत महत्त्वपर्ण होता है। इसका पारिश्रमिक निर्धारण करना ज्योतिषशास्त्र के अनुसार निन्द्य है । पृच्छक अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा दे और ज्योतिषी भी उतने में सन्तुष्ट होकर फलादेश कहे तो निश्चित ही ज्योतिषी की भविष्यवाणी सार्थक होगी। इस प्रकार यदि दाम्पत्य जीवन के सन्दर्भ में विवाह-मेलापक हेतु ज्योतिष-शास्त्र को समुचित प्रयोग किया जाए तो भारतीय ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संक्षेप	**–**	**गमनिका**
बृ.पा.हो.	**–**	**बृहत्पाराशरहोरा**
जा.पा.	**–**	**जातक पारिजात**
भा.ज्यो.	**–**	**भारतीय ज्योतिष**
म.स्मृ.	**–**	**मनुस्मति**
हो.र.	**–**	**होरारत्नम्**
सा.	**–**	**सारावली**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओझा, गोपेश कुमार (1999), जातकपारिजात (वैद्यनाथकृत) मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स,दिल्ली।
2. कल्याण,ज्योतिषतत्त्वाङ्क (2014), पृ0 286 गीताप्रैस,गोरखपुर।
3. चतुर्वेदी, मुरलीधर (2002), होरारत्नम् (बलभद्र कृत) मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स,दिल्ली।
4. मेहता,एम.एस./थपलियाल पवन वल्लभ,(2012), आधुनिक विधि से कुण्डली की विवेचना,पृ0 148 सागर पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली।

5. शास्त्री, नेमिचन्द्र (2004), भारतीय ज्योतिष, भारतीय ज्ञानपीठ,काशी।
6. शास्त्री, हरगोविन्द/ नेने गोपाल शास्त्री (1997), मनुस्मृति (मनुकृत) चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
7. झा, देवचन्द्र (2007), वृहत्पाराशर होरा शास्त्रम् (पराशर कृत) चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
8. झा, सीताराम (2006), वृहज्जातकम् (वराहमिहिर कृत) सावित्री ठाकुर प्रकाशन, वाराणसी।

सन्दर्भ

[i] सर्वेषामपि चैतेषां वेद श्रुति विधानतः। गृहस्थ उच्चते श्रेष्ठः स त्रीनेतान् बिभर्ति हि।। म.स्मृ.6.89

[ii] भा.ज्यो. पृ.254

[iii] तनुं रूपं च ज्ञानं च वर्ण चैव बलाबलम्। प्रकृतिं सुख–दुःखं च तनुभावाद् विचिन्तयेत्।। बृ.पा.हो.12.2

[iv] जा.पा पृ.790

[v] कुटुम्बं च धनं धान्यं मृत्युजालममित्रकम्। धातुरत्नादिकं सर्व धनस्थानान्निरीक्षयेत्।। बृ.पा.हो.12.3

[vi] विक्रमं भृत्य–भ्रात्रादि चोपदेश–प्रयाणकम्। पित्रोर्वै मरणं विद्वान् दुश्चिक्याच्य निरीक्षयेत्।। बृ.पा.हो.12.4

[vii] बान्धवानथ यानानि मातृसौख्यादिकान्यपि। निधिक्षेत्र–गृहारामादिकंतुर्याद् विचारयेत्।।बृ.पा.हो.12.5

[viii] हो. र. पृ. 136

9 यन्त्रमन्त्रंतथाविद्यांबुद्धेश्चैवप्रबन्धकम्पुत्रराज्यापभ्रंशादीन्पश्येत्पुत्रालयाद्बुधः।। बृ.पा.हो.12.6

[x] जा.पा.पृ. 890

[xi] मातुलमृत्युशंकाञ्च शत्रूंश्चैव व्रणादिकान्। सपत्नीमातरं चापि शत्रस्थानान्निरीक्षयेत्।।(बृ.पा.हो.12.7)

[xii] जायामध्वप्रयाणंच पदाप्तिं च वणिक्–क्रियाम् । बृ.पा.हो.12.8

[xiii] भा.ज्यो. पृ.315

[xiv] आयुर्मृत्युपरं चापि गुदे चैवाङ्कुरादिकम्। बृ.पा.हो.12.9

[xv] भा.ज्यो.पृ. 328

[xvi] धर्मं भाग्मथो श्यालं भ्रातृ–पत्न्यादिकांस्तथा। तीर्थयात्रादिकं सर्वं धर्मस्थानान्निरीक्षयेत्।। बृ.पा.हो.12.10

[xvii] राज्यं चाकाशवृत्तिं च गानं च पितरं तथा। ऋणं चापि प्रवासं च व्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ।। बृ.पा.हो.12.11

[xviii] नानावस्तुभवस्यापि पुत्रजायादिकस्य च। आय सशुसमृद्धिंचभवस्थानान्निरीक्षयेत्।। बृ.पा.हो.12.12

[xix] व्ययं च वरिवृत्तान्तं रिष्फमन्त्यादिकं तथा। व्ययाच्चैव हि जानीयादिति सर्वत्र बुद्धिमान्।। बृ.पा.हो.12.13

[xx] जा.पा.पृ. 969

[xxi] सा. पृ. 101

[xxii] नवमांशे कलत्राणां दशमांशे महत् फलम्। बृ.पा.हो.7.3

[xxiii] पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके। बृ.पा.हो.7.2

[xxiv] त्रिंशांशके रिष्टफलं खवेदांशे शुभाशुभम्। बृ.पा.हो.7.5